

قَلِيلًا ۳ اَوْزِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيلًا ۴ اِنَّا سَلَقْنَا عَلَيْكَ

कम करो या इस पर कुछ बढ़ाओ⁵ और कुरआन खूब ठहर ठहर कर पढ़ो⁶ बेशक अन्करीब हम तुम पर एक

قَوْلًا ثَقِيلًا ۵ اِنَّ نَاشِئَةَ اللَّيْلِ هِيَ اَشَدُّ وَطْأًا وَاَقْوَمُ قِيلًا ۶ اِنَّ

भारी बात डालेंगे⁷ बेशक रात का उठना⁸ वोह ज़ियादा दबाव डालता है⁹ और बात खूब सीधी निकलती है¹⁰ बेशक

لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيلًا ۷ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ

दिन में तो तुम को बहुत से काम हैं¹¹ और अपने रब का नाम याद करो¹² और सब से टूट कर

تَبَتَّلًا ۸ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا اِلَهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَاكِيلًا ۹

उसी के हो रहो¹³ वोह पूरब का रब और पश्चिम का रब उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं तो तुम उसी को अपना कारसाज बनाओ¹⁴

وَاصْبِرْ عَلَى مَا يَقُولُونَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَبِيلًا ۱۰ وَذُرْنِي وَا

और काफ़ि़रों की बातों पर सब्र फ़रमाओ और उन्हें अच्छी तरह छोड़ दो¹⁵ और मुझ पर छोड़ो

الْبُكَدِّ بَيْنَ اُولَى النَّعْمَةِ وَاُولَى النَّعْمَةِ قَلِيلًا ۱۱ اِنَّ لَدَيْنَا اَنْكَالًا وَاَجِيًّا ۱۲

उन झुटलाने वाले मालदारों को और उन्हें थोड़ी मोहलत दो¹⁶ बेशक हमारे पास¹⁷ भारी बेड़ियां हैं और भड़कती आग

अपने कपड़ों से लिपटने वाले, इस के शाने नुज़ूल में कई कौल हैं : बा'ज मुफ़स्सरीन ने कहा कि इब्तिदाए ज़मानए वह्य में सय्यिदे आलम ख़ौफ़ से अपने कपड़ों में लिपट जाते थे ऐसी हालत में आप को हज़रते जिब्रील ने "يَا أَيُّهَا الْمُرْمَلُ" कह कर निदा की। एक कौल यह है कि सय्यिदे आलम صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ चादर शरीफ़ में लिपटे हुए आराम फ़रमा रहे थे इस हालत में आप को निदा की गई "يَا أَيُّهَا الْمُرْمَلُ" बहर हाल यह निदा बताती है कि महबूब की हर अदा प्यारी है और यह भी कहा गया है कि इस के मा'ना यह हैं कि रिदाए नुबुव्वत व चादरे रिसालत के हामिल व लाइक़। 3 : नमाज़ और इबादत के साथ 4 : या'नी थोड़ा हिस्सा आराम के लिये हो बाकी शब इबादत में गुज़ारिये, अब वोह बाकी कितनी हो उस की तफ़सील आगे इशार्द फ़रमाई जाती है 5 : मुराद यह है कि आप को इख़्तियार दिया गया है कि ख़्वाह क़ियाम निस्फ़ शब से कम हो या निस्फ़ शब या इस से ज़ियादा हो। (بیاضی) मुराद इस क़ियाम से तहज्जुद है जो इब्तिदाए इस्लाम में वाजिब व बक़ोले फ़र्ज़ था, नबिय्ये करीम صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ और आप के अस्हाब शब को क़ियाम फ़रमाते और लोग न जानते कि तिहाई रात या आधी रात या दो तिहाई रात कब हुई तो वोह तमाम शब क़ियाम में रहते और सुब्द तक नमाज़ें पढ़ते, इस अन्देशे से कि क़ियाम क़दरे वाजिब से कम न हो जाए, यहां तक कि उन हज़रात के पाउं सूज जाते थे, फिर यह हुक्म एक साल के बा'द मन्सूख़ हो गया और इस का नासिख़ भी इसी सू़रत में है "فَأَقْرَهُ وَاْمَاتِهِ سَمِرَةٌ" 6 : रिआयते वुकूफ़ और अदाए मख़ारिज के साथ और हुरूफ़ को मख़ारिज के साथ ता ब इम्कान सहीह अदा करना नमाज़ में फ़र्ज़ है। 7 : या'नी निहायत जलील व बा अज़मत, मुराद इस से कुरआने मजीद है, यह भी कहा गया है कि मा'ना यह हैं कि हम आप पर कुरआन नाज़िल फ़रमाएंगे जिस में अवामिर नवाही और तकालीफ़ शाक़का हैं जो मुकल्लफ़ीन पर भारी होंगी। 8 : सोने के बा'द 9 : ब निस्वत दिन की नमाज़ के 10 : क्यूं कि वोह वक़्त सुकून व इत्मीनान का है शोरो शग़ब से अम्न होती है, इख़्लास ताम व कामिल होता है, रिया व नुमाइश का मौक़अ नहीं होता। 11 : शब का वक़्त इबादत के लिये खूब फ़राग़त का है 12 : रात व दिन के जुम्ला अवका़त में तस्बीह, तहलील, नमाज़, तिलावते कुरआन शरीफ़, दर्से इल्म वग़ैरा के साथ और यह भी कहा गया है कि इस के मा'ना यह हैं कि अपनी क़िराअत की इब्तिदा में "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ" पढ़ो। 13 : या'नी इबादत में इन्क़िताअ की सिफ़त हो कि दिल **اَبْلَاح** तआला के सिवा और किसी की तरफ़ मशगूल न हो, सब अलाका क़त्अ (तअल्लुक ख़त्म) हो जाएं, उसी की तरफ़ तवज्जोह रहे। 14 : और अपने काम उसी की तरफ़ तपवीज़ करो 15 : "وَهٰذَا مُنْسُوْخٌ بِاٰیَةِ الْقِتَالِ" (और यह हुक्म जिहाद की आयत से मन्सूख़ हो चुका है) 16 : बद्र तक या रोज़े क़ियामत तक 17 : आख़िरत में।

وَطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَعَذَابًا أَلِيمًا ۝١٣ يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ

और गले में फंसता खाना और दर्दनाक अज़ाब¹⁸ जिस दिन थरथराएंगे ज़मीन और पहाड़¹⁹

وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيبًا مَّهِيلًا ۝١٤ إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا

और पहाड़ हो जाएंगे रेतों का टीला बहता हुआ बेशक हम ने तुम्हारी तरफ़ एक रसूल भेजे²⁰ कि तुम पर

عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا ۝١٥ فَعَصَىٰ فِرْعَوْنُ

हाज़िर नाज़िर है²¹ जैसे हम ने फ़िरअौन की तरफ़ रसूल भेजे²² तो फ़िरअौन ने उस रसूल का

الرَّسُولَ فَأَخَذْنَاهُ أَخْذًا وَبِيلًا ۝١٦ فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِن كَفَرْتُمْ يَوْمًا

हुक़म न माना तो हम ने उसे सख़्त गिरफ़्त से पकड़ा फिर कैसे बचोगे²³ अगर²⁴ कुफ़्र करो उस दिन से²⁵

يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا ۝١٧ السَّمَاءُ مُنْفَطِرٌ بِهِ ۝١٨ كَانَ وَعْدُهُ مَفْعُولًا ۝١٨

जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा²⁶ आस्मान उस के सदमे से फट जाएगा **اللَّهُ** का वा'दा हो कर रहना

إِنَّ هَذِهِ تَذْكِرَةٌ ۝١٩ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذْ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۝٢٠ إِنَّ رَبَّكَ

बेशक यह नसीहत है तो जो चाहे अपने रब की तरफ़ राह ले²⁷ बेशक तुम्हारा रब

يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِنْ ثُلُثِي اللَّيْلِ وَنِصْفَهُ وَثُلُثَهُ وَطَائِفَةٌ مِّنَ

जानता है कि तुम क़ियाम करते हो कभी दो तिहाई रात के क़रीब कभी आधी रात कभी तिहाई और एक जमाअत

الَّذِينَ مَعَكَ ۝٢١ وَاللَّهُ يُقَدِّرُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۝٢٢ عَلِمَ أَنْ لَنْ تُحْصَوْهُ

तुम्हारे साथ वाली²⁸ और **اللَّهُ** रात और दिन का अन्दाज़ा फ़रमाता है उसे मा'लूम है कि ऐ मुसलमानो तुम से रात का शुमार न हो सकेगा²⁹

فَتَابَ عَلَيْكُمْ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ ۝٢٣ عَلِمَ أَنْ سَيَكُونُ

तो उस ने अपनी मेहर से तुम पर रूजूअ़ फ़रमाई अब कुरआन में से जितना तुम पर आसान हो उतना पढ़ो³⁰ उसे मा'लूम है कि अन्क़रीब कुछ तुम में

مِّنْكُمْ مَّرْضَىٰ ۝٢٤ وَأَخْرُونَ يُضْرِبُونَ فِي الْأَرْضِ يَبْتَغُونَ مِنْ فَضْلِ

बीमार होंगे और कुछ ज़मीन में सफ़र करेंगे **اللَّهُ** का फ़ज़ल तलाश

18 : उन के लिये जिन्होंने ने नबी صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की तक्ज़ीब की 19 : वोह क़ियामत का दिन होगा । 20 : सख़ियेदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ 21 : मोमिन के ईमान और काफ़िर के कुफ़्र को जानते हैं 22 : हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام 23 : अज़ाबे इलाही से 24 : दुन्या

में 25 : या'नी क़ियामत के दिन जो निहायत होलनाक होगा 26 : अपने शिद्दते दहशत से 27 : ईमान व ताअत इख़्तियार कर के 28 : तुम्हारे

अस्हाब की, वोह भी क़ियामे लैल में आप का इत्तिबाअ करते हैं । 29 : और ज़ब्वे अवक़ात न कर सकोगे 30 : या'नी शब का क़ियाम मुआफ़

اللَّهُ ۗ وَآخِرُونَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۗ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۗ وَ

करने³¹ और कुछ **अल्लाह** की राह में लड़ते होंगे³² तो जितना कुरआन मुयस्सर हो पढ़ो³³ और

أَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَأَقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا ۗ وَمَا

नमाज़ काइम रखो³⁴ और ज़कात दो और **अल्लाह** को अच्छा कर्ज़ दो³⁵ और

تُقَدِّمُوا مَالًا لِنَفْسِكُمْ ۖ مِنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ وَأَعْظَمُ أَجْرًا ۗ

अपने लिये जो भलाई आगे भेजोगे उसे **अल्लाह** के पास बेहतर और बड़े सवाब की पाओगे

وَاسْتَغْفِرُوا لِلَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَحِيمٌ ۚ

और **अल्लाह** से बख़्शिश मांगो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है

﴿٥٦﴾ ﴿٢٠﴾ ﴿٢١﴾ ﴿٢٢﴾ ﴿٢٣﴾ ﴿٢٤﴾ ﴿٢٥﴾ ﴿٢٦﴾ ﴿٢٧﴾ ﴿٢٨﴾ ﴿٢٩﴾ ﴿٣٠﴾ ﴿٣١﴾ ﴿٣٢﴾ ﴿٣٣﴾ ﴿٣٤﴾ ﴿٣٥﴾ ﴿٣٦﴾ ﴿٣٧﴾ ﴿٣٨﴾ ﴿٣٩﴾ ﴿٤٠﴾ ﴿٤١﴾ ﴿٤٢﴾ ﴿٤٣﴾ ﴿٤٤﴾ ﴿٤٥﴾ ﴿٤٦﴾ ﴿٤٧﴾ ﴿٤٨﴾ ﴿٤٩﴾ ﴿٥٠﴾ ﴿٥١﴾ ﴿٥٢﴾ ﴿٥٣﴾ ﴿٥٤﴾ ﴿٥٥﴾ ﴿٥٦﴾ ﴿٥٧﴾ ﴿٥٨﴾ ﴿٥٩﴾ ﴿٦٠﴾ ﴿٦١﴾ ﴿٦٢﴾ ﴿٦٣﴾ ﴿٦٤﴾ ﴿٦٥﴾ ﴿٦٦﴾ ﴿٦٧﴾ ﴿٦٨﴾ ﴿٦٩﴾ ﴿٧٠﴾ ﴿٧١﴾ ﴿٧٢﴾ ﴿٧٣﴾ ﴿٧٤﴾ ﴿٧٥﴾ ﴿٧٦﴾ ﴿٧٧﴾ ﴿٧٨﴾ ﴿٧٩﴾ ﴿٨٠﴾ ﴿٨١﴾ ﴿٨٢﴾ ﴿٨٣﴾ ﴿٨٤﴾ ﴿٨٥﴾ ﴿٨٦﴾ ﴿٨٧﴾ ﴿٨٨﴾ ﴿٨٩﴾ ﴿٩٠﴾ ﴿٩١﴾ ﴿٩٢﴾ ﴿٩٣﴾ ﴿٩٤﴾ ﴿٩٥﴾ ﴿٩٦﴾ ﴿٩٧﴾ ﴿٩٨﴾ ﴿٩٩﴾ ﴿١٠٠﴾

सूरए मुदस्सिर मक्किय्या है, इस में छप्पन आयतें और दो रुकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहूम वाला¹

يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۗ قُمْ فَأَنْذِرْ ۗ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۗ وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۗ

ऐ बाला पोश ओढ़ने वाले² खड़े हो जाओ³ फिर डर सुनाओ⁴ और अपने रब ही की बड़ाई बोलो⁵ और अपने कपड़े पाक रखो⁶

फरमाया । **मस्अला** : इस आयत से नमाज़ में मुलक़ क़िराअत की फ़र्जियत साबित हुई । **मस्अला** : अक़ल दरजए क़िराअते मफ़रूज़ एक बड़ी आयत या तीन छोटी आयतें हैं । **31** : या'नी तिजारात या त़लबे इल्म के लिये **32** : इन सब पर रात का क़ियाम दुश्वार होगा **33** : इस से पहला हुक़म मन्सूख़ किया गया और ये भी पन्जगाना नमाज़ों से मन्सूख़ हो गया । **34** : यहां नमाज़ से फ़र्ज़ नमाज़ें मुराद हैं । **35 : हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** ने फ़रमाया कि इस कर्ज़ से मुराद ज़कात के सिवा राहे खुदा में खर्च करना है सिलए रेहमी में और मेहमान दारी में और ये भी कहा गया कि इस से तमाम सदक़ात मुराद हैं जिन्हें अच्छी तरह माले हलाल से खुशदिली के साथ राहे खुदा में खर्च किया जाए । **1** : सूरए मुदस्सिर मक्किय्या है, इस में दो **2** रुकूअ, छप्पन **56** आयतें, दो सो पचपन **255** कलिमे, एक हजार दस **1010** हर्फ़ हैं ।**

2 : ये ख़िताब हज़ूर सय्यिदे अ़लाम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** को है । **शाने नुज़ूल** : हज़रते जाबिर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से मरवी है सय्यिदे अ़लाम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : मैं कोहे हिरा पर था कि मुझे निदा की गई **“يَا مُدَّثِّرُ إِنَّكَ رَسُولُ اللَّهِ”** मैं ने अपने दाएं बाएं देखा कुछ न पाया, ऊपर देखा एक शख़्स आस्मान ज़मीन के दरमियान बैठा है (या'नी वोही फ़िरिशता जिस ने निदा की थी) ये देख कर मुझ पर रो'ब हुवा और मैं ख़दीजा के पास आया और मैं ने कहा कि मुझे बाला पोश उढ़ाओ, उन्होंने उढ़ा दिया तो जिब्रील आए और उन्होंने ने कहा : **“يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ”**

3 : अपनी ख़्वाब गाह से **4** : क़ौम को अज़ाबे इलाही का ईमान न लाने पर **5** : जब ये आयत नाज़िल हुई तो सय्यिदे अ़लाम ने अल्लाहु अक़बर फ़रमाया, हज़रते ख़दीजा ने भी हज़ूर की तकबीर सुन कर तकबीर कही और खुश हुई और उन्हें यकीन हुवा कि वहय आई । **6** : हर तरह की नजासत से क्यूं कि नमाज़ के लिये त़हारत ज़रूरी है और नमाज़ के सिवा और हालतों में भी कपड़े पाक रखना बेहतर है या येह मा'ना हैं कि अपने कपड़े कोताह कीजिये ऐसे दराज़ न हों जैसी कि अ़रबों की आदत है क्यूं कि बहुत ज़ियादा दराज़ होने से चलने फिरने में नजिस होने का एहतिमाल रहता है ।